भारतीय इतिहास : एक पुनरावलोकन

अनिकेत रंजन*

किसी भी देश के इतिहास को जानना हो तो अतीत, वर्तमान और भविष्य को अलग करके नहीं देखा जा सकता। उनका संबंध अविभाज्य है। कहा जाता है कि इतिहास हमें बहुत सबक सिखाता है। दूसरी कहावत यह भी है इतिहास अपने आप को कभी नहीं दोहराता। सही इतिहास विकासक्रम की अनिवार्यताओं, स्थिति, घटना आदि की विशिष्ट भूमिकाओं को स्वीकार करता है।

इतिहासकार मनुष्य होने के नाते जब मानव सम्बन्धी अतीत के तथ्यों को संजोने बैठता है तो उसका पूरी तरह तटस्थ और वस्तुनिष्ठ न रह पाना स्वाभाविक है। लेकिन यदि वह अपनी मानसिकता, अपने पूर्वाग्रहों और अपने विचारों के प्रति सचेत नहीं रहता तो उसकी अतीत की समझ सीमित और संकुचित हो जाती है। जब भारत जैसे विस्तृत और जटिल समस्याओं वाले देश के इतिहास लेखन का प्रश्न हो, जहाँ पुनर्जागरण, राष्ट्रीय आन्दोलन और फिर देश का विभाजन हुआ हो, तो इतिहासकार के पूर्वाग्रहों द्वारा इतिहास के पूरे परिदृश्य के ही गलत परिप्रेक्ष्य में बद्ध हो जाने की सम्भावना बनी रहती है। भारतीय इतिहास के आधुनिक काल में राष्ट्र निर्माण और राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान इतिहास की मूलधारा को न पहचान कर, उसके व्यापक और सार्वभौम रूवरूप को अनदेखा कर, राजनीति के सतही स्वरूप में उलझ जाने की प्रवृत्ति का आसानी से शिकार हुआ जा सकता है। राष्ट्रवाद और विकास काल में राष्ट्रहित की बात करना एक आदत और नीति बन जाती है। समाज के जागरूक वर्ग इसी दिशा में कार्यरत होते है। ऐसी स्थिति में इतिहासकार महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है।[1]

अन्धकार में प्रकाश की ओर अनन्त यात्राएँ अक्सर भविष्य में छलाँगे हुआ करती हैं, जो इतिहास है। यह भी अनुभव होता है कि विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों और पर्यावरण में अलग–अलग मानव समूह अपने–अपने तरीके से देशकाल रहस्यों पर काबिज होने का प्रयास करते रहे। लड़ाई विषमताओं से जूझते रहने की थी, जो आज भी है। वही जाति इतिहास के थपेड़ों में जीवित रहती है जो साहस की भावना से भरी होती है और परिणामों की परवाह न करते हुए

***एम.ए. इतिहास विभाग, मगध यूनिवर्सिटी, बोध गया**

कठिनाइयों, यहाँ तक कि मृत्यु को भी गले लगाती है। वहीं लोग प्रकृति के सुखों का विस्तार करते हैं, उसकी सभ्यता को संजो कर रखते हैं और आगे की पीढ़ी को हस्तान्तरित कर अपने दायित्व को पूरा करते हैं।

यह माना जाता है कि काल का शाश्वत प्रवाह है। उसे अतीत, वर्तमान, भविष्य में रेखांकित करके एक निश्चित देश और काल की सीमा में बाँध दिया जाता है। काल अनन्त है। उसमें गति है। देश सीमाबद्ध है,वह जड़ है। काल गत्वर होने से चेतन है। जहु अगर सृष्टि की भौगोलिकता है, तो चेतन उसकी ऐतिहासिकता।[2]

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या हम मनुष्य के भीतर बहने वाली सृजन धारा को इतिहास के दावों और दबावों से मुक्त रख सकते है? इतिहास का निर्माण कर्म द्वारा होता है, विचार उसमें प्रेरणा देता है, मार्ग प्रशस्त करता है। मृत इतिहास –दृष्टि में अर्थहीन है। इतिहास विकास की दो प्रक्रिया है सातव्य एवं परिवर्तन। इतिहास–बोध निरवधि और अल्प कालिमा की सम्यक प्रतीती है। देश और काल अर्थात् जड़ (भौगोलिकता और चेतना) ऐतिहासिकता की गत्यात्मक समासिकता इतिहास दृष्टि को वर्चस्वी बनाती है।[3]

यह कहना भी अनिवार्य है कि आज का जीवन–दर्शन द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद से ग्रसित है। अतीत का वह वैभव, वे आनन्दपूर्ण कल्लोलमयी रंगरेलियाँ, सूक्ष्म भावजन्य मादकता से मिश्रित और अणु–अणु को विभोर कर देने वाला जीवन का वह मधुर राग, वह झूठा सपना सह मिट गया हैं। लोगों की सौन्दर्य–चेतना एक ऐसी व्यापक चेतना में तिरोजित हो गई है जहाँ जीवन का सुन्दर–असुन्दर अच्छा–बुरा सब कुछ ग्राह्य है। प्राचीन अध्यात्म–चिन्तन और मध्य युग के कल्पना–वैभव पर आज हाहाकारमय विषण्ण वातावरण का कुहरा है। बुजुर्गों की राय में मानव के वे सौन्दर्य –तत्व नष्ट होते जा रहे हैं जो पुराने जमाने में उल्लासपूर्ण चारू वातावरण और कोमल अनुभूतियों के सहज प्रकम्पन से उद्भूत होते थे। आधुनिक बनने के फेर में प्राचीन मर्यादायें शिथिल हो गई हैं।

इतिहास को अगर मानवीय चेतना का आधार माना जाय तो यह कहा जा सकता है कि प्राचीन काल से ही इतिहास द्वारा लोगों के आपसी संबंध जोड़ने की प्रवृत्ति रही है। इस कारण मानवीय संवेदना से संबंध रहा है। विभिन्न कालों में सांस्कृतिक, सामाजिक व राजनैतिक परिवर्तन का बोध इतिहास द्वारा होता रहा है। और इतिहास ही इसका साक्षी रहा है। इस प्रकार प्राचीन काल से अति–आधुनिक युग तक किसी देश के क्रिया–कलापों का ज्ञान हमें ऐतिहासिक तथ्यों द्वारा होता है।

भारतीय संस्कृति का इतिहास उतना ही पुराना कहा जा सकता है जितना कि मानव सभ्यता के विकास का इतिहास। मन, कर्म, और वचन में मानवीय व्यक्तित्व के तीन गुण हैं इन्हीं तीनों गुणों के परिणामस्वरूप विभिन्न संरचनाएँ होती हैं। धर्म, दर्शन, साहित्य एवं अध्यात्म आदि, ये मन की सृष्टि हैं जो ऐतिहासिक तथ्यों द्वारा प्रमाणित होता है। इतिहास द्वारा यह भी पता चलता है कि जीवन पद्धति मानव का मार्ग प्रशस्त करती है। इसीप्रकार संस्कृति के नियम शाश्वत होते हैं जो उस समय को एक विशिष्ट संस्कृति के लिए जाना जाता है कि मानव जीवन के उदय का इतिहास मानव की उपलब्धियों का साक्ष्य रहा है जिसके आधार पर हम किसी देश या जाति के इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है।

ऐसी अनेक विचारधाराएँ आज हैं जो एक देश नहीं पूरी मानव जाति के महत्व रखती हैं। मार्क्स, फ्रायड, आइन्स्टाइन आदि के विचारों का दायरा आज उनके ही देश में नहीं बल्कि उनके विषयों के बाहर भी उस पूरे चिन्तन में व्याप्त है जिसे हम आधुनिक कहते हैं। स्थानीय तत्वों के अध्ययरत के पीछे भी एक सार्वभौतिक दृष्टि रहती है– नृशास्त्री, भाषाई सामाजिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टियों से मनुष्य की विभिन्न जीवन पद्धतियों और विश्व–दृष्टियों का अध्ययन और विश्लेषण। आधुनिकता का एक तात्पर्य जहाँ अपनी जड़ों की छानबीन है, अपनी स्थानीयता, इतिहास, परम्परा आदि में। ऐसा अनुभव होता है कि भारतीय प्रवृत्ति नये या वैज्ञानिक विचारों के मामले में सतर्क रहते हुए भी निषेधात्मक नहीं रही। औषधि–विज्ञान के चरक, कामशास्त्र के वात्स्यायन, भाषा शास्त्री पाणिनी, वैज्ञानिक आर्यभट्ट सभी जहाँ ऋषि कोटि में रखे जाते रहे वहाँ धर्म विज्ञान को विरोधी नहीं मनुष्य के आचरण और लेखाव्यवहार का नियामक माना गया।

संस्कृति विशेष में नए विचार किस प्रकार ग्रहण होते हैं, या ग्रहण नहीं हो पाते–यह बहुत कुछ उन आचार–विचार आदि पर भी निर्भर है जो उस संस्कृति में परम्परा के रूप में जातीय स्मृति के रूप में और भाषाओं में जीवित रहते हैं। अमेरिका या रुस जैसे देश जिनकी ऐतिहासिक स्मृति बहुत लम्बी नहीं, नये विचारों को या नये से लगते पुराने विचारों को भी लेकर जल्दी प्रतिकृत होंगे। यह प्रतिक्रिया उन देशों में धीमी और सशंकित होगी जिनका ऐतिहासिक अनुभव बहुत पुराना है और जिनके अचेतन, भाषाई, सामाजिक और जातीय मन पर ऐतिहासिक उतार–चढ़ाव की अनेक तहें जमी हुई हैं।[4]

भारत का इतिहास वास्तव में राष्ट्रीय एकीकरण और शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व का इतिहास है। यहाँ बौद्ध, जैन, इस्लाम, सिख एवं सनातम सभी धर्मों के अनुयायी एक साथ रहे और एक दूसरे के सामाजिक सांस्कृतिक, आर्थिक व धार्मिक जीवन

को प्रभावित व समृद्ध करते रहे। हिन्दू कवियों ने कर्बला पर मर्सिये लिखे और मुसलमान कवियों ने राम, और कृष्ण के गीत गाये।

ऐतिहासिक प्रमाणों के एवं साक्ष्यों के आधार पर यह मान गया है कि हिन्दू धर्म विश्व का एक प्राचीनतम धर्म है। यह संसार का एकमात्र ऐसा धर्म है जो व्यक्ति प्रधान नहीं, अर्थात् जिसे एक व्यक्ति ने नहीं चलाया। सदियों पुराना यह धर्म वास्तव में असंख्य ऋषियों, मुनियों एवं तत्व, दर्शियों के ज्ञान एवं अनुभूतियों का संचित कोष है। वैदिक युग से आज तक की लम्बी यात्रा के पश्चात् भी यह अपना स्वरूप और अस्तित्व बनाये रखने के लिए सक्षम रहा है। इसका एक मुख्य कारण हिन्दू धर्म की सहिष्णुता और विश्व बन्धुत्व की भावना है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि विभिन्न परम्पराओं को आत्सात करते हुए भारतीय इतिहास ने विश्व बन्धुत्व की भावना को प्रस्तुत किया। हमें पूरे भारत की प्राचीन सभ्यता, संस्कृति एवं धार्मिक प्रवृत्ति का अध्ययन करने पर यह ज्ञान होता है कि –

सर्वे भवन्तु सुखिन, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणी पश्यन्तु मा कश्चिद दुःखभाग भवेत्।।

विश्व बंधुत्व का यह सिद्धान्त सम्पूर्ण मानवता के कल्याण का मूलमंत्र है।

इतिहास मानव सभ्यता के अभ्युदय के साथ विकसित हुआ। समय के साथ–साथ इतिहास में भी बहुत परिवर्तन हुए हैं। यह भी कहा जाता है कि इतिहास अपने को दोहराता नहीं, बल्कि काल खण्ड में यह मानव के क्रिया–कलापों, आचार–व्यवहार को प्रतिबिम्बित करता रहा है। 'इतिहास पर एक विहंगम दृष्टि डालें, तो स्थान–स्थान पर आवश्यकता अविष्कार का जननी है' कहावत चरितार्थ होता है। यह भी बोध होता है कि आदिकाल से ही मानव की सभ्यताओं के क्रमिक विकास में इतिहास में महत्वूपर्ण योगदान रहा है। यदि ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में झाँके तो प्राचीन वैदिक काल से मानव अभी सभ्यता की ओर अपने कदम बढ़ा रहा था और वह एक नये धर्म और संस्कृति का अविष्कार कर रहा था, जिसमें संस्कारों और नियमों का समावेश कर रहा था। वह समझता था कि ये नियम औश्र संस्कृति सर्वश्रेष्ठ हैं। संस्कृति किसी भी देश, जाति एवं समाज की पहचान होती है। संस्कृति के बारे में विचार करते समय यह सोच लेना आवश्यक है कि संस्कृति का अर्थ क्या है।

मानव शास्त्र के अनुसार ''किसी भी समाज और उसके योग के अर्न्तगत आता है अर्थात् जिन रीतियों को लोग मानते हैं जिन परम्पराओं का पालन करते हैं। जिस तरह उनका सोच विचार है, जिसकी धार्मिक आस्थाएँ हैं वे सभी की सभी इसमें समाहित है। संस्कृति का निर्भाण एक पीढ़ी के द्वारा नहीं अपितु अनेक पीढ़ियों के चिन्तन से हुआ सब व्यक्ति अपनी सामर्थ्य एवं योग्यता के अनुसार संस्कृति के निर्माण में सहयोग देते रहे हैं। संस्कृति का वाहक इतिहास रहा है।[5]

भारत के ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर यह माना जाता है कि भारत प्राचीन काल से ही सुसंस्कृत तथा उन्नत देश रहा है। सैन्धव सभ्यता विश्व के किसी भी देश की सभ्यता से कम महत्व की नहीं थी। इस प्रकार इतिहास द्वारा मानवीय चेतना का सिंहावलोकन करने पर यह ज्ञात होता है कि इतिहास द्वारा अपने अतीत कि पीढ़ियों के उत्थान–पतन का आभास होता है।

सैन्धव संस्कृति की खोज पुरातत्वक्ताओं की सर्वाधिक महत्व की उपलब्धि होने के साथ ही भारतीय इतिहास की युगान्तकारी घटना थी। जिसके आधार पर भारत की प्रारम्भिक जीवन शैली का पता चला इसी प्रकार ऐतिहासिक संदर्भों के आधार पर यह पता चलता है कि भारतीय परिप्रेक्ष्य में सभ्यता एवं संस्कृति का परिपोषक इतिहास है।

भारतीय परिवेश में स्वतंत्रता से पहले का इतिहास बहुत संघर्षमय रहा है। लेकिन यह कहा जा सकता है कि इसके पहले का इतिहास भी भारत के लिए घोर संकट का रहा है। क्योंकि भारत पर लगातार आक्रमण होते रहे हैं फिर भी यहाँ की सांस्कृतिक प्रवाह में अनेक संस्कृतियाँ आक मिलीं और उनके समवेत प्रयास से भारतीय संस्कृति का एक नवीन आधार बना इस कारण यह कहा जा सकता है कि इतिहास द्वारा हमें अपने विगत सामाजिक स्थितियों का बोध होता है। इतिहास के संदर्भों के आधार पर यह भी ज्ञात होता है कि भारत के ऐतिहासिक परिदृश्य में विशेष रूप से यहाँ के लोगों की सांस्कृतिक गतिविधियों को परखा जा सकता है। इस प्रकार इतिहास को तभी जाना जा सकता है जब उसके सभी आयामों का अवलोकन किया जाए।

इतिहास परक दृष्टि से हमें यह जानकारी मिलती है कि भूत, और तवर्तमान में समाज के तेजी से बदलते हुए परिवेश के गति को परखा जा सकता है। इतिहास से यह भी बोध होता है कि भारत देश अत्यन्त विषम परिस्थितियों से गुजरा है। इतिहास का सामान्य संबंध बीती हुई घटनाओं के वर्णन से है पर आज जो कुछ हो रहा है वह भी एक ऐतिहासिक सत्य है। यदि और अधिक सूक्ष्म दृष्टि से देखें तो प्रत्येक वस्तु व्यक्ति अथवा घटना अपने समय में ऐतिहासिक होती है। इस प्रकार इतिहास विशिष्ट वस्तुओं, व्यक्तियों अथवा घटनाओं से संबंधित होता है और धारणाओं के आधार पर उनकी व्याख्या करता है। समय के अनुसार धारणाएँ परिवर्तित होती रहती हैं। अतः इतिहास की व्याख्याएँ भी बदल जाती है। वस्तुतः सत्य का स्वरूप जानना बड़ा दुष्कर है। हम जिसे आज सत्य समझते हैं, अधिक ज्ञान प्राप्त होने पर वही हमें असत्य लगने लगता है। क्योंकि इतिहास भी केवल घटनाओं का विवरण मात्र न होकर उनकी व्याख्या है अतः उसकी व्याख्या जिस दृष्टिकोण से की जाती है वही सत्य हो जाता है। इसी से इतिहास पुराण में और पुराण इतिहास में बदल जाता है।[6]

इस प्रकार इतिहास बोध मानव जाति को प्रेरक तत्व के रूप में भविष्य निर्माण की प्रेरणा देती है। इसी प्रकार परम्परा सदैव जागरूक होती है। वह वर्तमान के साथ प्राचीन का समन्वय करके ऐसे रूपों का सृजन करती है। जो प्राचीन पर आधारित किन्तु वर्तमान की आवश्यकता के अनुरूप होते हैं।

परस्पर का अर्थ बहुत लचीला है। इसमें अन्धविश्वास अथवा रूढ़ियों का कोई महत्व नहीं होता। परम्परा का संबंध संस्कृति से अविच्छिन्न रूप से है। जिस प्रकार शताब्दियों तक निरन्तर विचारों के मन्थन से संस्कृति का विकास होता है उसी भाँति परम्परा भी पीढ़ी–दर पीढ़ी के अनुभवों को संचितकोष है। इसमें विकास तथा प्रगति का तत्व अनिवार्य है।[7]

इस प्रकार परम्परा केवल अतीत का वर्तमान में संक्रमण नहीं है। परम्परा का अर्थ है निरन्तर तथा परिवर्तन। हमें जो कुछ विरासत में प्राप्त हुआ है उसमें से जो कुछ भी वर्तमान के संदर्भ में प्रासंगिक है, वही ग्रहण किया जाता है। अतः परम्परा का संदैव मूल्यांकन होता रहता है। यह किसी जाति में नवीन जीवनी शक्ति एवं नयी उमंग भरती है। सांस्कृतिक जीवन में केवल परम्परा और निरन्तरता ही नहीं, नवीनता का भी महत्वपूर्ण स्थान है। परम्परा में समूह चेतना प्रतिबिम्बित होती है जिसमें किसी समुदाय के विश्वास छिपे रहते हैं। इन विश्वासों में से अनेक लुप्त हो जाते हैं और अनेक पुनरुज्जीवित किये जाते हैं। जब हम किसी भी देश को वर्तमान और भविष्य का निर्धारण किया जाता रहा है। जब हम किसी देश की सभ्यता और संस्कृति का प्रादुर्भाव और विकास निरन्तर होता रहा है। इस प्रकार ऐतिहासिक अवधारणा द्वारा मनुष्य ने अपने विकासक्रम में उपलब्धि हासिल किया। यह भी कहा जा सकता है कि किसी स्थान विशेष में रहने वाले लोगों की क्षेत्रीय परम्पराएँ संस्कृति का राजनीजिक परम्पराएँ राष्ट्र का निर्माण करती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. सुमित्रा गुप्ता प्रज्ञा : नेहरू विशेषांक, पृष्ठ 122
2. नरेश मेहता, काव्य का वैष्णव व्यक्तित्व पृष्ठ–3
3. पं0 जवाहर लाल नेहरू– हिन्दुस्तान की कहानी, पृष्ठ–28
4. कुंवर नारायण– आधुनिकता–समय–रचनात्मकता, आधुनिक कला कोश, पृष्ठ '93
5. गोवर्धन राम शर्मा– हिस्ट्री टू प्रीहिस्ट्री, इलाहाबाद, 1980 पृष्ठ 131
6. A Manual of Ethics John S. Mack page 18-20
7- Asit Kumar
8. भाषा की उत्पत्ति, मूल लेखक लियोनार्ड ब्लूमफील्ड, अनुवादक सत्य जीवन शर्मा, नासिक सरस्वती अप्रैल 1924, पृष्ठ 411.13